धमक देसी हल्दी की चारों ओर बोल रही तूती, पीछे है काली मिर्च

SRA-1

सरहद पार फैल रही है भारतीय मसालों की महक

भाषा सिंह

नई दिल्ली। भारतीय भोजन की जान हैं मसाले। इन मसालों की गमक जहां देश की सरहदों को पार करके अपनी धमक गुंजा रही है, वहीं संकट में फंसे किसानों को मुनाफे की राह भी दिखा रही है। इसमें इस समय कमान संभाल रखी है देश की हल्दी ने। भारत की हल्दी की मांग अपनी अच्छी क्वालिटी के चलते मसाले के साथ-साथ औषधि के रूप में भी खूब फल रही है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अनुमान के अनुसार भारतीय मसालों की मांग हर साल तीन फीसदी की दर से बढ़ रही है। अगले पांच सालों में इसके बढ़कर 48.1 लाख टन होने की उम्मीद है। अभी भारत में 42.6 लाख टन मसाले पैदा होते हैं। भारत की काली मिर्च

इन दिनों नंबर वन की रेस में वियतनाम से थोड़ी पिछड़ी जरूर है, लेकिन गुणवत्ता में यह आज भी नंबर वन बताई जाती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मंदी और अमेरिका जैसे मुख्य निर्यातक देश की अर्थव्यवस्था बैठने के बावजूद अभी भी भारतीय मसालों की तूती बोल रही है। हल्दी का बाजार इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि अब उन इलाकों में भी किसान इसे उगाने लगे हैं जहां पहले इसकी ज्यादा खेती नहीं

- हर साल तीन फीसदी की दर से बढ़ रही है मसालों की मांग
- काली मिर्च का भी कोई तोड़ नहीं खाड़ी देशों से बहुत बढ़ी है मांग

होती थी। इसके बारे में 'नईदुनिया' को कालीकट में स्थित देश के शीर्ष मसाला केंद्र भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. आनंद राज ने बताया कि पंजाब के किसान बड़े पैमाने पर हल्दी उगा रहे हैं। उनका संस्थान और देश भर में फैले संस्थान के 34 सेंटरों का पूरा ध्यान मसालों की बेहतर फसल को सुनिश्चित करना है। चूंकि अधिकांश मसालों को उगाने के लिए रबी या खरीफ की फसल को छोड़ना नहीं होता है, इसलिए भी जहां तक किसानों को पता चल रहा है वहां वे बाजार को ध्यान में रखकर मसाले उगाने लगे हैं। भारत की काली मिर्च का भी कोई तोड़ नहीं है और इसकी मांग पिछले दिनों खाड़ी देशों से बहुत बढ़ी है। मसाला बोर्ड के आंकड़े के मुताबिक पिछले साल की तुलना में हल्दी, अदरक, काली मिर्च, छोटी-बड़ी इलायची के निर्यात की मात्रा और मूल्य दोनों में वृद्धि हुई है। मिर्च के निर्यात में भी 18-19 फीसदी वृद्धि दर्ज की गई थी। इसका सीधा असर किसानों और उनके खेती के पैटर्न पर पड़ने लगा है। राजस्थान में जीरा की खेती किसान पहले से ज्यादा कर रहे हैं, तो काली मिर्च की खेती में दक्षिण भारत के अलावा महाराष्ट्र का कोंकण और उत्तर पूर्व के सातों राज्य एक नए केंद्र के रूप में उभर रहे है। वहीं झारखंड में अदरक और हल्दी की ओर किसानों ने रुख किया है।